3

मरकुस की पुस्तक

मसीह, सेवक

सुसमाचार के वृज़ांतों की दूसरी पुस्तक, मरकुस शायद चारों में से सबसे कम पढ़ी जाने वाली और सबसे कम पसन्द की जाने वाली पुस्तक है। परन्तु यह मसीह के जीवन की एक जबर्दस्त प्रस्तुति है।

मरकुस की पुस्तक का परिचय

पुस्तक का लेखक

पुस्तक में लेखक का नाम नहीं दिया गया, परन्तु प्राचीन (बाइबल से बाहर की) परज़्परा के अनुसार इस पुस्तक का लेखक यूहन्ना, जो मरकुस कहलाता है, है। कलीसिया के इतिहासकार यूसबियुस (लगभग 260–340 ईस्वी) ने पेपियास (लगभग 60–150 ईस्वी) के हवाला से मरकुस को इस पुस्तक का लेखक बताया था। यूसबियुस ने भी संकेत दिया था कि सिकन्द्रिया के ज़्लैमेंट और ओरिगन (लगभग 185–254 ईस्वी) का मानना था कि सुसमाचार का यह वृज़ांत मरकुस ने ही लिखा था।[1] इरेनियुस (लगभग 140–195 ईस्वी) ने अपने लेखों में इसी परज़्परा का समर्थन किया है।[2]

यूहन्ना मरकुस का इब्रानी नाम यूहन्ना (''यहोवा अनुग्रहकारी रहा है'') था, परन्तु हम उसे रोमी नाम, मरकुस (''लड़ाका'') से अधिक जानते हैं। वह सज़्भवतया अपनी माता मरियम के घर यरूशलेम में रहता था (प्रेरितों 12:12)। यह भी सज़्भव है कि वह यरूशलेम में मसीह के जीवन की कुछ घटनाओं का प्रत्यक्षदर्शी था। बहुत से लेखकों का मानना है कि मरकुस 14:51, 52 में यूहन्ना मरकुस अपनी ही बात कर रहा था। मरकुस का मन परिवर्तन सज़्भवतया पतरस के प्रचार से ही हुआ था (1 पतरस 5:13)। बाद में, उसकी मां का विश्वास मसीही लोगों के इकट्ठे होने का स्थान बन गया था (प्रेरितों 12:12)।[3]

कुलुस्सियों 4:10 में मरकुस को बरनबास का रिश्ते में भाई बताया गया है। छोटी उम्र में ही, वह पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा पर पौलुस और बरनबास के साथ चल पड़ा था, परन्तु बीच में वापस आ गया था (प्रेरितों 12:25; 13:5, 13), जिससे पौलुस बहुत नाराज हुआ था (प्रेरितों 15:37–39)। बरनबास को अभी भी मरकुस की क्षमता पर पूरा भरोसा था, जिस कारण वह उसे कुप्रुस में प्रचार करने के लिए अपने साथ ले गया (प्रेरितों 15:39)। बाद में,

मरकुस ने सुसमाचार प्रचार के लिए पतरस के साथ कार्य किया (1 पतरस 5:13)। अन्ततः, मरकुस ने पौलुस के साथ काम किया और पौलुस ने उसे अपने लिए बड़े काम का माना (कुलुस्सियों 4:10, 11; फिलेमोन 24; 2 तीमुथियुस 4:11)।

सामान्यतया यीशु तथा ज्यादातर प्रेरितों से छोटा समझे जाने वाले,[4] मरकुस को कुछ लोग लगभग दस साल छोटा मानते हैं। तीमुथियुस और तीतुस के साथ, वह प्रेरितों के काल का ''जूनियर प्रचारक'' माना जाता होगा। बाइबल से बाहर के स्रोतों से पता चलता है कि उसने सिकन्द्रिया, मिस्र में कलीसिया बनाई।

मरकुस को पौलुस सहित परमेश्वर की प्रेरणा पाए कई लोगों से सीखने के अवसर मिले थे। परन्तु प्राचीन (बाइबल से बाहर की) परम्परा विशेष तौर पर पतरस के साथ उसके सम्बन्ध पर ज़ोर देती है। मरकुस की पुस्तक को यूहन्ना मरकुस की पुस्तक बताने वाले इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उसे यह वृत्तांत पतरस से मिला था। उदाहरण के लिए, पेपियास ने मरकुस को ''पतरस का अनुवादक'' कहा था। उसने कहा:

> ... जो कुछ भी उसने लिखा वह बिल्कुल सही है, परन्तु वैसे ही क्रमबद्ध नहीं जैसे हमारे प्रभु ने बोला या किया था। क्योंकि उसने न तो हमारे प्रभु को कभी सुना था और न उसके पीछे चला, परन्तु ... वह पतरस के साथ रहा था, जिसने उसे आवश्यक निर्देश दिए, लेकिन हमारे प्रभु के उपदेशों का इतिहास देने के लिए नहीं: इसी कारण मरकुस ने जो कुछ लिखा है, उसमें कोई गलती नहीं की है; क्योंकि वह बड़े ध्यान से एक ही बात पर कान लगा रहा था, कि जो कुछ सुना उससे आगे न बढ़े, या इन वृत्तांतों में कुछ गलत न कहे।[5]

सिकन्द्रिया के क्लैमेंट ने कहा था कि पतरस के सुनने वालों ने मरकुस से उस शिक्षा को लिखित रूप से छोड़ने का आग्रह किया था, जो पतरस ने बताई थी और यह कि पतरस ने इस वृत्तांत को कलीसियाओं में पढ़े जाने का अधिकार दिया था।[6] इरेनियुस ने लिखा है कि ''पतरस और पौलुस की मृत्यु के बाद, मरकुस ने हमें पतरस द्वारा सुनाई गई बातें लिखित रूप में सौंप दीं।''[7]

कई तथ्य इस प्राचीन परम्परा की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं: प्रेरितों 10:36-42 में पतरस का प्रवचन मरकुस की पुस्तक की एक रूपरेखा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। मरकुस सुसमाचार का एकमात्र लेखक है, जिसने मरकुस 16:7 के शब्द लिखे हैं, जिनमें पतरस का उल्लेख है। पुस्तक की शैली चश्मदीद या प्रत्यक्षदर्शियों की गवाही की तरह ही है। (कुछ लेखक मरकुस को ''एक वक्ता की गंवार यूनानी'' भाषा कहते हैं।)

पुस्तक का उद्देश्य

बहुत से लोगों का मानना है कि मरकुस ने रोमी पाठकों के लिए लिखा।[8] उसने उन वंशावलियों समेत, उन बातों को शामिल नहीं किया, जिनमें ऐसे पाठकों की कोई रुचि नहीं थी। उसने पुराने नियम की भविष्यवाणियों की भी बहुत कम बात की। उसने मसीह के

जीवन की यहूदी पृष्ठभूमि पर भी कोई ज़ोर नहीं दिया। यहूदी शब्दों या रीतियों का परिचय करते समय उसने सामान्यतया उन्हें विस्तार से समझाया। उसने लातीनी वाक्यांशों का इस्तेमाल किया, जबकि सुसमाचार के अन्य लेखकों ने यूनानी का (उदाहरण के लिए, ''पैमाने'' के लिए *modius* [मरकुस 4:21], ''कर'' के लिए *census* [12:14], ''सिपाही'' के लिए *speculator* [6:27], ''सूबेदार'' के लिए *centurio* [15:39, 44, 45])। सुसमाचार का वही एकमात्र लेखक था, जिसने रूफुस का उल्लेख किया (15:21), जिसे रोम के मसीही जानते थे (रोमियों 16:13)। मैरिल टैनी का निष्कर्ष था कि ''मरकुस [की पुस्तक] व्यावहारिक रोमी मानसिकता के आम लोगों के लिए लिखी गई थी, जिनमें सुसमाचार नहीं पहुंचा था।''[9]

ऐसे श्रोताओं का ध्यान खींचने के लिए, मरकुस ने यीशु को *कार्य* करने वाले व्यक्ति के रूप में पेश किया। यह छोटी और संक्षिप्त बल्कि चारों में सबसे छोटी पुस्तक है। इसमें कुछ शिक्षा है: केवल चार विस्तृत दृष्टांत हैं और विस्तार में कोई उपदेश नहीं है। मरकुस ने यीशु के *आश्चर्यकर्मों* पर ज़ोर दिया, जो मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करते थे: इसके आकार पर विचार करें, तो इस वृत्तांत में सुसमाचार के किसी भी अन्य वृत्तांत से अधिक आश्चर्यकर्मों को स्थान दिया गया है।

मरकुस की पुस्तक *आगे बढ़ती है।* 16 में से 13 अध्यायों का आरम्भ ''और'' शब्द से होता है। लेखक के पसन्दीदा यूनानी शब्दों में से एक *euthus* (या *eutheos*) था, जिसका हिन्दी में अनुवाद ''तुरन्त'' किया गया है। मरकुस ने इस शब्द का इस्तेमाल ब्यालीस बार किया था। यीशु को अपने मिशन को पूरा करने की ओर तेज़ी से आगे बढ़ने के रूप में दिखाया गया है।

मरकुस 10:45 पुस्तक का मुख्य पद है: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया, कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।'' ''सेवा टहल की जाए'' और ''सेवा टहल करे'' शब्दों पर विशेष ध्यान दें। मत्ती की पुस्तक में, यीशु को राजा के रूप में दिखाया गया है; परन्तु मरकुस की पुस्तक में उसे सेवक के रूप में दिखाया गया है। मरकुस ने यीशु के लिए किसी ईश्वरीय शीर्षक का इस्तेमाल नहीं किया और न ही उसके अधिकार पर ज़ोर दिया।[10] यीशु ने *सेवा की*।[11]

नि:संदेह, परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए इस वृत्तांत का अन्तिम उद्देश्य यही है कि सुसमाचार के सब वृत्तांतों से अलग यीशु को परमेश्वर के पुत्र और हमारे उद्धारकर्ता के रूप में दिखाया जाए। पुस्तक का आरम्भ ''परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ'' (मरकुस 1:1) से होता है। चारों वृत्तांतों में ''सुसमाचार'' शब्द बारह बार मिलता है; जिनमें से छह बार मरकुस की पुस्तक में ही है। मरकुस का केवल ढंग ही दूसरे लेखकों से अलग था, क्योंकि उसने संक्षेप में यीशु की तस्वीर बनाई और उस तस्वीर को अपने आप बोलने दिया।

पुस्तक की विशेषताएं

पुस्तक की विशेषताओं का सम्बन्ध मुख्य तौर पर इसके सम्भावित स्रोत (पतरस) और इसके उद्देश्य (यीशु को सेवक के रूप में प्रस्तुत करना) से है।

जैसे पहले ध्यान दिलाया गया है, मरकुस *कार्य करने* का सुसमाचार है।

इसके अलावा मरकुस *भावना* का सुसमाचार भी है। इस पुस्तक में यीशु के श्रोताओं की भावनाएं तथा उनकी प्रतिक्रियाएं हैं, जैसे–उन्हें ''आश्चर्य'' हुआ था (1:27); वे आलोचना करने वाले थे (2:7); वे ''डर गए'' थे (4:41); वे घबरा गए थे (6:14); वे ''आश्चर्य में'' थे (7:37); वे मन में शत्रुता रखते थे (14:1)। तेईस ऐसी प्रतिक्रियाएं लिखित रूप में दर्ज हैं। पुस्तक में यीशु की भावनाओं को भी लिखा गया है: वह ''तरस खाता'' था (1:41; 6:34; 8:2); उसे क्रोध आता था (3:5); वह ''क्रुद्ध'' होता था (10:14); वह दुखी होता था (7:34; 8:12); वह ''अधीर और व्याकुल'' होता था (14:33, 34)।

मरकुस रचित सुसमाचार *लगाव* का वृत्तांत भी था। यीशु को लोगों की प्रसन्नता, भूख, कठिनाइयों, स्वास्थ्य तथा कपट का ध्यान था।

इसके अलावा मरकुस की पुस्तक *सेवा* के लिए भी सुसमाचार का वृत्तांत है। यीशु ने परदेशी की सहायता की, गूंगे को ज़बान दी, भूखे को खाना खिलाया और उग्र लोगों को डांटा।

सुसमाचार के अन्य वृत्तांतों की तरह, मरकुस की पुस्तक भी *क्रूस* का सुसमाचार है। मसीह की सबसे बड़ी सेवा क्रूस पर उसकी मृत्यु थी। मरकुस की पुस्तक का चालीस प्रतिशत भाग यरूशलेम की अन्तिम यात्रा व उसके बाद की घटनाओं के बारे में है। इन घटनाओं में यूहन्ना के बाद मरकुस को ही अधिक स्थान दिया गया है।

अन्त में, मरकुस *स्पष्टता* के सुसमाचार की पुस्तक है। इसमें यीशु के व्यक्तिगत हावभाव के बारे में भी लिखा गया है। इसकी शैली भिन्न तथा प्रभावित करने वाली है। कुछ लोगों ने इसे ''गांव के प्रचारक की शैली'' कहा है।

पुस्तक की तिथि

मरकुस की पुस्तक स्पष्टतया पहली शताब्दी के मध्य में लिखी गई थी। मरकुस ने पुस्तक में सिकन्दर और रूफुस का उल्लेख किया (15:21), स्पष्टतया इसलिए क्योंकि वे उसके पाठकों को जानते थे। इससे पुस्तक को क्रूस की पीढ़ी के लोगों में ही स्थान मिलता है। पहले मैंने पतरस की पुस्तक से जुड़ी परम्परा पर ध्यान दिलाया था। बहुत से प्राचीन लेखकों का सुझाव था कि पतरस ने वितरण से पूर्व मरकुस की पुस्तक को पड़ा था। पतरस की मृत्यु 65 और 68 ईस्वी के बीच हुई मानी जाती है।[12]

आज बहुत से लोगों का मानना है कि मत्ती और लूका की पुस्तकें मरकुस की नकल हैं, परन्तु प्रारम्भिक (बाइबल से बाहर की) परम्पराएं मत्ती को ही प्राथमिकता देती हैं। इस संदर्भ में टैनी की टिप्पणी बिल्कुल सही है:

> यदि ... ये सुसमाचार वृज़ांत उस सामान्य सामग्री के बजाय, जिसका प्रेरित और उनके सहयोगी प्रचार करते थे, किसी और से लिए गए, पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिए गए प्रभु यीशु मसीह के बारे में प्रेरितों के संदेश से अलग हैं [और वे हैं भी], तो सज़्भावना यही है कि वे उनके साथ ही लिखे गए थे।[13]

मरकुस के लेखन के समय के लिए 50-60, 58-65, और 60-70 ईस्वी के अनुमान लगाए जाते हैं। इन अनुमानों के आधार पर हम यह कहने में सुरक्षित होंगे कि इस पुस्तक को 70 ईस्वी के बाद नहीं लिखा गया था।

पुस्तक के विभाजन

मरकुस की पुस्तक की रूपरेखा देना आसान काम नहीं है। मरकुस ने विचार की किसी भी धर्मवैज्ञानिक रेखा का अनुसरण नहीं किया। उसका वृज़ांत प्रभाव डालने के लिए तैयार किया गया पूरा और सज़्पूर्ण है।

पुस्तक की रूपरेखा के लिए अलग-अलग ढंग सुझाए गए हैं: जॉन फिलिप्स अपने विभाजनों के लिए मरकुस 10:45 के मुज़्य विचारों का इस्तेमाल करता था: (1) सेवक सेवा के लिए अपना जीवन देता है (अध्याय 1-10); (2) सेवक बलिदान के लिए अपना जीवन देता है (अध्याय 11-16)।[14] हैनरिटा मियर्स ने इस विचार को विस्तार देकर ''सेवक'' शज़्द का इस्तेमाल करते हुए सात गुणा विभाजन का सुझाव दिया है: (1) सेवक का आना और परखा जाना (अध्याय 1); (2) सेवक का काम करना (अध्याय 2 व 3), वगैरह-वगैरह।[15] कुछ लोग पुस्तक को गलील और यहूदिया के दो मुज़्य क्षेत्रों, जिनमें यीशु ने काम किया, में बांटते हैं। टैनी के सात-खण्ड के विभाजन में उन क्षेत्रों का विस्तार से इस्तेमाल किया गया है, जहां यीशु गया।[16]

हम नीचे दी गई रूपरेखा में इन तथा अन्य विचारों को मिलाकर इस्तेमाल करेंगे। परन्तु याद रखें कि मरकुस की *पूरी* पुस्तक पर विचार किया जाना चाहिए।

मरकुस की पुस्तक की एक रूपरेखा

I. सेवक सेवा के लिए तैयार हुआ (1:1-13)।

- क. शीर्षक तथा उद्देश्य (1:1)।
- ख. यूहन्ना द्वारा तैयार किया गया मार्ग (1:2-8)।
- ग. यीशु बपतिस्मा लेने से तैयार हुआ (1:9-11)।
- घ. यीशु परीक्षा के द्वारा तैयार हुआ (1:12, 13)।
- ड. इस सब में, यीशु को अपनी *सिफारिशें* मिलीं। उसका ...
    1. यूहन्ना द्वारा समर्थन किया गया।
    2. पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक हुआ।

3. शैतान द्वारा परीक्षा हुई।

II. सेवा के लिए सेवक की प्रतिबद्धता (1:14-8:30)।

क. सेवा का *प्रारम्भ* (1:14-2:12)।

1. समय का यह काल मूलत: गलील में था, जहां यूहन्ना की हत्या के बाद यीशु गया था (1:14, 15)।
2. यीशु की चार मछुआरों को बुलाहट (1:16-20)।
3. कफ़रनहूम में एक महान दिन (1:21-34) (चंगाइयों का आरम्भ)।
4. एक कोढ़ी को चंगा करने सहित, गलील की सामान्य यात्रा (1:35-45)।
5. छत में से नीचे उतारे जाने वाले आदमी को चंगाई के साथ, कफ़नरहूम में एक और महान दिन (2:1-12)। क्षमा करने की यीशु की सामर्थ से चंगाइयों की सूची चरम पर पहुंची।

ख. *आलोचना* होने लगती है (2:13-3:35)।

1. झील के किनारे शिक्षा (2:13)।
2. लेवी को बुलाना और पापियों के साथ खाना (और आलोचना) (2:14-17)।
3. उपवास के विषय पर आलोचना (2:18-22)।
4. सब्त पर आलोचनाएं (2:23-3:5)।
5. फरीसियों और हेरोदियों का षड्यन्त्र (3:6)।
6. यीशु की सेवकाई में और विभिन्नता आई: बारह को चुनना और इतने व्यस्त हो जाना कि उसके मित्रों को भी लगा कि ''उसका चिज़ ठिकाने नहीं'' है (3:7-21)।
7. यह आरोप कि यीशु आश्चर्यकर्म बालज़बूल की सामर्थ से करता है; पवित्र आत्मा के विरुद्ध पाप पर शिक्षा (3:22-30)।
8. परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वालों को यीशु की माता और भाई कहा गया (3:31-35)।

ग. सेवा की *चुनौती*। (निरन्तर *उलझन* के साथ, समय-समय पर झील पार से दिकापुलिस, फिनीके, कैसरिया फिलिप्पी, और अन्य स्थानों में जाना।)

1. नाव से दृष्टांतों में शिक्षा: बीज बोने वाले, दीपक, बढ़ने और राई के बीज के दृष्टांत (4:1-34)।
2. गलील की झील को पार करना (और एक तूफ़ान को शांत करना)-दिकापुलिस में (4:35-41)।
3. गिरासेनी व्यज़्ति को चंगा करना, जिसमें दुष्टात्मा थी (और दो हज़ार सूअरों के मरने की कहानी) (5:1-20)।
4. फिर से झील पार करना और याईर की बेटी को चंगा करना (इसके साथ

''साथ लगते आश्चर्यकर्म'') (5:21-43)।

5. नासरत में जाना और ठुकराया जाना (यीशु को एक बढ़ई कहा गया) (6:1-6)।
6. बारह को लिमिटेड कमिशन पर भेजना (हेरोदेस का ध्यान आकर्षित करके-राजा द्वारा यूहन्ना से किए गए व्यवहार का विचार करने पर यह एक खतरनाक काम था) (6:7-32)।
7. अपने चेलों के साथ सुनसान स्थान में जाना और बड़ी भीड़ का पीछे आना; पांच हज़ार लोगों को खिलाना (एक महत्वपूर्ण घटना)(6:33-44)।
8. झील यीशु के लिए चहल-कदमी का काम करती है (6:45-52)-बाद में गन्नेसरत के इलाके में एक सामान्य शिक्षा तथा चंगाई (6:53-56)।
9. हाथ धोए बिना खाने वालों के साथ खाने के लिए आलोचना और परम्परावाद पर एक प्रवचन (7:1-23)।
10. सूर और सैदा को जाना, और सुरूफिनीकी की लड़की को चंगाई देने की कहानी (7:24-30)।
11. दिकापुलिस को जाना:
    क. सामान्य शिक्षा तथा चंगाई (7:31-37)।
    ख. चार हज़ार को खिलाना (8:1-9)।
12. गलील में वापसी (गलील सागर के पश्चिमी तट पर दलमनूता)-एक चिह्न मांगा गया, और ''फरीसियों के खमीर'' के विरुद्ध चेतावनी (8:10-21)।
13. बैतसैदा को जाना-और एक अन्धे को चंगा करना (8:22-26)।
14. कैसरिया फिलिप्पी में जाना और महान *अंगीकार* (8:27-30) (यीशु की सेवकाई का एक *चरम*)।

III. सेवक सेवा के सबसे बड़े कार्य, क्रूस पर मरने के लिए आगे बढ़ता है (8:31-15:47)।

क. उसकी *अन्तिम* सेवकाई (8:31-10:52)।

1. अपने चेलों को अपनी मृत्यु के लिए तैयार करने की कोशिश करना।
    क. अपने चेलों को बताना कि वह मरेगा और अपने चेलों को अपने क्रूस उठाने के लिए प्रोत्साहित करना (8:31-9:1)। (देखें 9:1.)
    ख. यीशु की वास्तविक महिमा रूपांतरण में दिखाई गई, क्योंकि इसमें पुनरुत्थान की भविष्यवाणी हुई (9:2-13)।
    ग. एक लड़के को चंगा करना, जिसे उसके चेले चंगा नहीं कर पाए

थे (9:14-29)।

घ. अपनी मृत्यु के बारे में और शिक्षा (9:30-32)।

ङ. चेलों की बिल्कुल नासमझी; यह झगड़ा कि उनमें से बड़ा कौन होगा और प्रभु के पास कौन बैठेगा (9:33-50)।

2. यरूशलेम में जाना

क. यहूदिया में और यरदन के पास (पिरिया) (10:1)।

(1) विवाह व तलाक पर यीशु की चुनौती (10:2-12)।

(2) बच्चों को आशीर्वाद देना (10:13-16)।

(3) धनी, जवान हाकिम की कहानी और सब कुछ छोड़ने का प्रतिफल (10:17-31)।

ख. यरूशलेम के मार्ग पर।

(1) अपने चेलों को स्पष्ट बताना कि ज़्या होने वाला था (10:32-34)। उनकी नासमझी इतनी अधिक थी कि दो ने तो उसके दायें और बायें बैठने की इच्छा व्यज़्त कर दी (10:35-45)। (एक मुज़्य पद: 10:45.)

(2) यरीहो में से जाते हुए; अन्धा बर्तिमाई चंगा किया जाता है (10:46-52)।

ख. एक निर्णायक समय: उसकी सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (11:1-14:42)।

1. रविवार: विजयी प्रवेश का दिन (11:1-11)।

2. सोमवार: अंजीर के पेड़ को श्राप देने तथा मन्दिर को शुद्ध करने का दिन (11:12-19)।

3. मंगलवार: एक व्यस्त दिन।

क. अंजीर का एक पेड़ सूख गया (11:20-26)।

ख. प्रश्नों का एक दिन।

(1) ''किस अधिकार से?'' का प्रश्न (11:27-33)।

(2) दुष्ट किसानों का दृष्टांत शामिल किया जाना (12:1-12)।

(3) कैसर को कर देने पर प्रश्न (12:13-17)।

(4) पुनरुत्थान के विषय में प्रश्न (12:18-27)।

(5) पहली आज्ञा के बारे में और राज्य से अधिक दूर न होने वाले प्रश्न (12:28-34)।

(6) यीशु के शत्रु शांत हो गए; यीशु की ओर से एक प्रश्न (12:35-37)।

ग. शास्त्रियों से सावधान रहने की चेतावनी (12:38-40)।

घ. विधवा की दमड़ियां (12:41-44)।

ङ. मन्दिर से निकलते हुए, यीशु का अपोकलिप्टिक (गुप्त) संदेश (13:1-37)।

4. बुधवार: यीशु के लिए एक शान्त दिन।
   क. उसके शत्रुओं के लिए एक व्यस्त दिन (14:1, 2), परन्तु यीशु के लिए एक शान्त दिन।
   ख. बैतनिय्याह में भोजन और यीशु का अभिषेक (14:3-9)।
   ग. यीशु को मारने के षड्यन्त्र में यहूदा का योगदान (14:10, 11)।
5. गुरुवार: तैयारी का दिन।
   क. फसह के लिए तैयारी (14:12-16)।
   ख. फसह का पर्व और प्रभु भोज की स्थापना (14:17-26)।
   ग. यह भविष्यवाणी कि सब यीशु को छोड़ जाएंगे और पतरस उसका इनकार करेगा (14:27-31)।
   घ. गतसमनी के बाग में (14:32-42)।

ग. उसका *क्रूसारोहण* और गाड़ा जाना (शुक्रवार को) (14:43-15:47)।
1. यीशु का पकड़वाया जाना और चेलों का भाग जाना (14:43-52)।
2. कैफा के सामने पेशी; पतरस आग सेंकता है (14:53-65)।
3. पतरस का इनकार (14:66-72)।
4. महासभा द्वारा पुष्टि और पिलातुस के सामने सुनवाई; बरअज़्बा को छोड़ा जाना और यीशु को ठट्ठे करना (15:1-20)।
5. *मेरे पापों के कारण यीशु का मारा जाना* (15:21-41)।
6. यीशु का गाड़ा जाना (15:42-47)।

IV. सेवक को पुनरुत्थान के द्वारा ऊंचा किया गया (16:1-20)।

क. स्त्रियों का कब्र पर जाना और स्वर्गदूत की घोषणा (16:1-8)।[17]

ख. पुनरुत्थान के बाद दिखाई देना:
1. मरियम मगदलीनी को (16:9-11)।
2. दो चेलों को (16:12, 13)।
3. ग्यारह को (16:14-18)। (विश्वास और ग्रेट *कमीशन* के लिए चेलों की आवश्यकता: 16:15, 16।)

ग. यीशु का स्वर्गारोहण, साथ में चेलों का बाद का कार्य और यीशु द्वारा उसकी *पुष्टि* (16:19, 20)।

टिप्पणियां

[1]यूसबियुस *एकलेसिएस्टिकल हिस्टरी* 3.39; 2.15; 6.25. पेपियास ''अपोस्टलिक फ़ादर्स'' में से एक था। उसके लेखों में प्रेरितों के समय की मौखिक परज़्पराओं तथा दंतकथाओं की महत्वपूर्ण समझ है, परन्तु वे बाद के इतिहासकारों यूसबियुस और इरेनियुस द्वारा सज़्भाले गए भागों में ही मिलती हैं। अच्छी समझ तथा फल देने वाला लेखक यूसबियुस कलीसिया के विकास का वर्णन करने वाला पहला इतिहासकार था। एक यूनानी धर्मवैज्ञानिक, सिकन्द्रिया के ज़्लैमेंट को ''चर्च फ़ादर्स'' में से माना जाता है। ''व्याज़्यात्मक प्रचार का पितामाह'' कहा जाने वाला ओरिगन तीसरी शताज़्दी का सबसे महत्वपूर्ण प्रचारक माना जाता है। [2]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 3.1.1. पोलिकार्प के शिष्य, समुरना के ''बिशप'' इरेनियुस को दूसरी शताज़्दी का सबसे महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक (थियोलॉजियन) माना जाता है। [3]यह सज़्भव है कि यह घर प्रभु के अन्तिम भोज का स्थान (मरकुस 14:12-17) और/या वह स्थान हो, जहां प्रेरितों ने यीशु द्वारा प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की प्रतीक्षा की थी (प्रेरितों 1:4-8, 12)। [4]यदि मरकुस 14:51, 52 यूहन्ना मरकुस के लिए है, तो इससे यह संकेत मिलता है कि वह प्रेरितों से छोटा था। [5]यूसबियुस *एकलेसिएस्टिकल हिस्टरी* 2.16. [6]वहीं, 3.39. [7]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 31.1. [8]आरज़्भ में ''सुसमाचार के चार वृज़ांत'' पाठ देखें। [9]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1961), 157. [10]ग्रेट कमीशन के मज़ी के वृज़ांत (मज़ी 28:18-20) से मरकुस के वृज़ांत (मरकुस 16:15, 16) की तुलना करें।

[11]यहां एक दिलचस्प टिप्पणी है: मरकुस, जो स्वयं एक सेवक के रूप में *असफल* हो गया था, ने यीशु को सिद्ध सेवक के रूप में पेश किया। कुछ प्रारज़्भिक लेखक मरकुस की पुस्तक के लेखन को पतरस की मृत्यु के बाद का मानते हैं, परन्तु यह पुस्तक के ''प्रकाशन'' (प्रतियां बनाकर उनके वितरण करने) की बात हो सकती है। [13]टैनी, 157. [14]जॉन फिलिप्स, *एज़्सप्लोरिंग द स्क्रिप्चर्स* (लंदन, विज़्टरी प्रैस, 1965), 200. [15]हैनरिटा सी. मियर्स, *व्हट द बाइबल इज़ ऑल अबाउट* (ग्लैंडेल, कैलिफोर्निया: गॉस्पल लाइट पज़्लिकेशन्ज़, 1966), 390. [16]टैनी, 159-60. [17]आयत 8 के बाद बारह आयतों की प्रामाणिकता पर संदेह किया जाता है, ज़्योंकि वे आयतें कई और महत्वपूर्ण हस्त लेखों में नहीं मिलती हैं। अधिक रूढ़िवादी लेखकों का मानना है कि वे यहां पर मूल शास्त्र से सज़्बन्धित हैं, जिन्हें बाद में मरकुस द्वारा जोड़ लिया गया, या परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी दूसरे लेखक द्वारा टिप्पणी के रूप में मिला दिया गया। (इसके एक उदाहरण के रूप में, देखें व्यवस्थाविवरण 34, जहां किसी दूसरे लेखक, शायद यहोशू ने उस पुस्तक में, जिसे मूसा ने लिखा था, मूसा की मृत्यु के सज़्बन्ध में जानकारी जोड़ दी।)